टिप्पणी

# 21

# अष्टाध्यायी का षष्ठ और सप्तम अध्याय

पूर्व के पाठों के समान इस पाठ में भी दीर्घ आदि विधिविषय में कुछ विशिष्ट नियमों की आलोचना करेंगे। उससे वेद में दीर्घविधि कहीं पर नित्य, अथवा कहीं पर विकल्प से और कहीं पर उसका निषेध होता है। और वे नियम लौकिक नियम से भिन्न ही हैं। उससे यहाँ धातुओं के अट आगम विषय में और आट आगमविषय में विशेषरूप से आलोचना करेंगे। लोक में जैसे लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे में हलादि धातुओं को अडागम, और अजादी धातुओं को आडागम होता है वैसे ही यहाँ पर भी अडागम और आडागम होता है परन्तु वेद में वे नियम कुछ भिन्न ही हैं। उन नियमों की यहाँ संक्षेप से आलोचना करेंगे। और उससे अट आट कहीं पर नित्य, और कही पर विकल्प से होते हैं। उस तिङन्तप्रकरण में हि के अपित्त्वविषय में आलोचना करेगे। लोक में सेर्ह्यपिच्च इस सूत्र से सि के स्थान में हि आदेश का विधान है, और उस हि को अपित्त्व अतिदेश करते है। वेद में तो ह्यादेश विषय में और अपित्त्व धर्मविषय में कुछ विलक्षण नियम है। और उन नियमों का इस पाठ में संक्षेप से प्रस्तुत किया है। और यणादेश विषय में, इयङुवङादेशविषय में और रुडागमादिविषय में संक्षेप से कुछ नियमों की और कुछ सूत्रों में आलोचना करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- वैदिक में दीर्घविधिविषय में विशिष्ट नियमों को जान पाने में;
- वेद में तिङन्तप्रकरण में लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे धातुओं को कैसे अडागम आडागम होता है इसको जान पाने में;

टिप्पणी

- वैदिक में तिङन्तप्रकरण में अपित्त्वधर्म का प्रयोजन तथा हि के स्थान में ध्यादेशविषय में तथा रुडागमादिवषय में विशिष्ट नियमों को जान पाने में;
- वेद में नञ् समास से भिन्न समास में क्त्व क्त्वादेश को जान पाने में।

## 21.1 निपातस्य च॥ ( 6.3.136 )

**सूत्रार्थ–** और निपात को ऋग्विषय में दीर्घ आदेश होता है।

**सूत्रावतरण**- पूर्वसूत्र के द्वारा ऋच निपातनों को दीर्घ नहीं होता है। इसलिए वहा दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान है। दो पद वाले इस सूत्र में निपातस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, च यह अव्ययपद है। यहाँ ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की, ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अलुगुत्तरपदे इस सूत्र से उत्तरपदे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। संहितायाम् इस सप्तमी एकवचनान्त पद का यहाँ अधिकार है। यहाँ पद योजना इस प्रकार है - ऋचि संहितायां निपातस्य च दीर्घः उत्तरपदे इति। सूत्रार्थ है ऋग्विषय संहिता में उत्तरपद परे रहते निपात को दीर्घ हो।

**उदाहरण**- एवा हि ते।

**सूत्रार्थसमन्वय**- एवा इस उदाहरण में एव इस शब्द का चादिगण में पाठ होने से चादयोऽसत्त्वे इस सूत्र से उसकी निपातसंज्ञा होती है। 'एवा हि ते' इस ऋङमन्त्र में उत्तरपद परे एव इस निपात अकार के स्थान में प्रकृतसूत्र से दीर्घ आकार होने पर एवा यह रूप सिद्ध होता है।

## 21.2 अन्येषामपि दृश्यते॥ ( 6.3.137 )

**सूत्रार्थ–** अन्य पूर्वपद स्थानों को भी दीर्घ हो।

**सूत्रावतरण**- पूर्वसूत्र के द्वारा जहा दीर्घ कहा नहीं गया है, परन्तु वेद में दीर्घ दिखाई देता है, उन अवशिष्ट में दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्रव्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में अन्येषाम् यह षष्ठ्यन्त पद है, अपि यह अव्यय है, और दृश्यते यह तिङन्तं पद है। यहाँ ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की, ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अलुगुत्तरपदे इस सूत्र से उत्तरपदे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। संहितायाम् इस

विषयसप्तम्यन्त पद का यहाँ अधिकार है। पदयोजना इस प्रकार है - ऋचि संहितायाम् अन्येषामपि दीर्घः उत्तरपदे इति। सूत्रार्थ है– ऋग्वेद संहिताविषय में उत्तरपद परे रहते अन्य शब्दों को भी दीर्घ होता है।

**उदाहरण**- पूरुषः।

**सूत्रार्थसमन्वय–** लोक में पुरुषः यह रूप होता है। परन्तु ऋग संहिता में प्रकृतसूत्र से उकार के दीर्घ होने पर पूरुषः यह रूप सिद्ध होता है।

## 21.3 छन्दस्युभयथा॥ ( 6.4.5 )

**सूत्रार्थ**- नाम को विकल्प से दीर्घ हो।

**सूत्रावतरण**- नामि इस सूत्र से लोक में धातृ नाम् यहाँ पर ऋकार को नित्य दीर्घ होता है, वेद में उस दीर्घ को विकल्प से विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्राव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से दीर्घ का विधान किया गया है। इस सूत्र में छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, उभयथा यह अव्ययपद है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, नामि इस सूत्र से नामि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस पद का यहाँ अधिकार है। इस प्रकार पद योजना होती है छन्दसि अङ्गस्य उभयथा दीर्घः नामि इति। इस सूत्र में उभयथा इस पदनिर्देश होने से सूत्र से विहित कार्य को विकल्प करता है। सूत्र का अर्थ होता है- छन्द विषय में अङ्ग को विकल्प से दीर्घ होता है नाम के परे रहते।

**उदाहरण**- धातृणाम्-धातृणाम्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- (वेद में) धातृ नाम् इस स्थिति में धातृशब्द से नाम के परे नामि इस सूत्र से ऋकार के स्थान में नित्य दीर्घ की प्राप्ति होने पर प्रकृतसूत्र से दीर्घ को विकल्प से विधान होता है। उस दीर्घ अभावपक्ष में रषाभ्यां नो णः समानपदे इस सूत्र से नकार के स्थान में णकार करने पर धातृणाम्, दीर्घपक्ष में धातक् णाम् ये दो रूप सिद्ध होते है।

**विशेष**- काशिकामत में इस सूत्र में न तिसृचतसृ इस सूत्र से तिसृचतसृ इस पद की अनुवृति से केवल तिसृ, चतसृ इन शब्दो को ही नाम के परे प्रकृतसूत्र से ऋकार के स्थान में विकल्प से दीर्घ होता है। भट्टोजिदीक्षित के मत से तो सभी शब्दों को नाम के परे विकल्प से दीर्घ होता है।

टिप्पणी

## 21.4 वा षपूर्वस्य निगमे॥ (6.4.9)

**सूत्रार्थ–** ष पूर्व के अच उपधा को विकल्प से दीर्घ होता है सर्वनामस्थान के परे।

**सूत्रावतरण**- वेदविषय में असम्बुद्धि सर्वनाम स्थान के परे नान्तपद के उपधाभूत षपूर्व को विकल्प से दीर्घविधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से दीर्घ का विधान होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में वा यह अव्यय पद है, षपूर्वस्य यह षष्ठ्यन्त पद, और निगमे यह विषयसप्तम्यन्त पद है। अङ्गस्य इस पद का यहा अधिकार है। ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण: इस सूत्र से दीर्घ: इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से सर्वनामस्थाने असम्बुद्धौ इन दो सप्तम्यन्त पद की, नोपधाया: इस सूत्र से नोपधाया: इस समस्त षष्ठ्यन्त पद की अनुवृति है। नस्य उपधा नोपधा, तस्य नोपधाया: यहाँ बहुव्रीहिसमास है। यहाँ 'न' यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद है अङ्गस्य इसका विशेषण है। इसलिए तदन्तविधि के द्वारा नान्त अङ्ग की यह अर्थ प्राप्त होता है। और यहाँ पदयोजना- नोपधाया: अङ्गस्य दीर्घ: असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने इति। सूत्र का अर्थ असम्बुद्धि सर्वनाम स्थान के परे नान्त अङ्ग की उपधाभूत षकार को विकल्प से दीर्घ हो निगम विषय में।

**उदाहरण**- ऋभुक्षणम्, ऋभुक्षाणम्।

**सूत्रार्थसमन्वय–** उणादिप्रत्यय से निष् होने से ऋभुक्षिन्-शब्द से अम करने पर ऋभुक्षिन् अम् इस स्थिति में सुडनपुंसकस्य इस सूत्र से अम्-प्रत्यय की सर्वनाम स्थान संज्ञा होने पर इतोऽत्सर्वनामस्थाने इससे उपधा इकार के स्थान पर अकार करने पर ऋभुक्षन् अम् यह होता है। यहाँ ऋभुक्षन् इस नान्त पदसंज्ञक के अम्-रूप असमबुद्धिसर्वनामस्थान परे होने से उसकी उपधा के षपूर्व अकार को प्रकृतसूत्र से विकल्प से दीर्घ होने पर आकार करने पर अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इससे नकार के स्थान पर णकार करने पर ऋभुक्षाणम् यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ दीर्घ के अभाव में ऋभुक्षणम् यह अन्य रूप है।

## 21.5 जनिता मन्त्रे॥ (6.4.53)

**सूत्रार्थ–** इडादि तृच परे होने पर णिलोप का निपातन करते है।

**सूत्रावतरण**- मन्त्र में इडादितृच्परे णी का लोप विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से णी के इकार के लोप का विधान करते है। दो पद वाले इस सूत्र में जनिता यह प्रथमान्त पद है, मन्त्रे यह विषयसप्तम्यन्त पद है। अतो लोप: इस सूत्र से लोप: इस प्रथमान्त पद की, निष्ठायां सेटि इस सूत्र

टिप्पणी



से सेटि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। तृचि इस सप्तम्यन्त पद की पूर्वसूत्र से अनुवृति है। पदयोजना- मन्त्रे णेः लोपः सेटि तृचि इति। यहाँ णि- इस पद से णिजादिप्रत्यय जानना चाहिए। उससे सूत्रार्थ है– मन्त्र विषय में णकार के इकार का लोप हो इडादि तृच के परे रहते।

**उदाहरण**- जनिता।

**सूत्रार्थसमन्वय**- जन्-धातु से णिच और तृच करने पर जनि तृ इस स्थिति में तृच्-प्रत्यय को इडागम करनी पर जनि इतृ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इडादितृच्परे होने से णकार के इकार का लोप होने पर और विभक्तिकार्य करने पर जनिता यह निपातन रूप सिद्ध होता है। लोक में तो णिलोप अभाव में जनयिता यह रूप बना।

## 21.6 छन्दस्यपि दृश्यते॥ (6.4.73)

**सूत्रार्थ–** अनजादियो को भी लुङ्-लङ्-लृङ् के परे आडागम हो।

**सूत्रावतरण**- छन्द में हलादि धातुओं को भी लुङ लङ और लृङ परे आडागम करने के लिए इस प्रकृत सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आडागम का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, अपि यह अव्ययम्, दृश्यते यह तिङन्त पद है। अङ्गस्य इस पद का यहा अधिकार है। लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु इन सप्तम्यन्त पद की यहाँ अनुवृति है। आडजादीनाम् इस सूत्र से आट् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अनजादीनाम् इस पद का यहाँ आक्षेप किया गया है। और इस प्रकार यहाँ पद योजना- छन्दसि अनजादीनाम् अपि लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु आट् दृश्यते इति। छन्द विषय में अनजादि धातुओं को भी अर्थात् हलन्त धातुओं को भी लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे आडागम हो यह सूत्रार्थ है।

**उदाहरण**- आनट्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- नश्-धातु से कर्ता में लुङ तिप च्लि और च्लि का लोप होने पर नश् ति इस स्थिति में यहाँ लुङ्परे हलादि नश्-धातु से अनजादि होने से आडजादीनाम् इस सूत्र से आडागम का अभाव है। प्रकृतसूत्र से उस अनजादि होने से भी आडागम होने पर तिप के इकारलोप होने पर आनश् त् इस स्थिति में षकार के षत्व होने पर हलन्त परे ति इसके तकार का हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इससे लोप होने पर आनष् इस स्थिति में और षकार को जश्त्व डकार को विकल्प से चर्त्व टकार करने पर आनट् यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ चर्त्व अभावपक्ष में आनड् यह अन्य रूप भी सिद्ध होता है।

**विशेष**- लोक में लुङ्-लङ्-लृङ्परे होने से हलादि धातुओं को लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः

टिप्पणी

इस न सूत्र से अडागम होता है और अजादि धातुओं को आडजादीनाम् इस सूत्र से आडागम होता है। तउस हलादि धातुओं को आडागम नहीं होता है, अजादि धातुओं को अडागम नहीं होता है। यहा वेद में हलादि धातुओं को आडागम हो उसके लिए इस सूत्र की रचना की है।

## 21.7 बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि॥ (6.4.75)

**सूत्रार्थ–** छन्द में माङ्योग के होने पर हो और अमाङ्योग के होने पर बहुल करके अट्-आट आगम न हो।

**सूत्रावतरण**- छन्द में अर्थात् वेद में अमाङ्योग को बाहुल्य से लुङ लङ और लृङ परे धातुओं को अडागम और आडागम का निषेध करने के लिए, और माङ्-योग में उसका विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से माङ्योग होने पर अडागम और आडागम का विधान करते है, और माङ्-योग के अभाव में उनका अभाव है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि अमाङ्योगे ये सप्तमी एकवचनान्त दो पद है, अपि यह अव्ययपद है। माङा योगः माङ्योगः, न माङ्योगः अमाङ्योगः, तस्मिन् अमाङ्योगे। अङ्गस्य इस पद का यहाँ अधिकार है। लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु इन सप्तम्यन्त पद की, और अट् उदात्तः इस प्रथमान्त पद के परे, आडजादीनाम् इस सूत्र से आट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। न माङ्योगे इस सूत्र से माङ्योगे इस सप्तम्यन्त पद, और न इस अव्यय की यहाँ अनुवृति है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि बहुलं लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु माङ्योगे अपि अट् आट्, अमाङ्योगे न (स्तः) इति। उससे छन्द में बाहुल्य से लुङ्-लङ्-लृङ् के परे अडाट नहीं हो, माङ्योग में तो हो यह इस सूत्र का अर्थ है। यहाँ लुङ्-लङ्-लृङ् के परे अडाट नहीं हो, माङ्योग में हो इन दो वाक्य के साथ छन्द विषय में बहुल करके इस वाक्य का योग होता है।

**उदाहरण**- जनिष्ठाः, अवाप्सुः।

**सूत्रार्थसमन्वय**- जन्-धातु से कर्ता में थास करने पर जन् थास् इस स्थिति में धातु से च्लि और च्लि के स्थान पर सिच और सिच को इडागम होने पर जन् इस् थास् इस स्थिति में लुङ्परक होने से धातु को लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होने से सिच के सकार को षकार होने पर और थकार को ठकार होने पर विभक्ति कार्य करने पर **जनिष्ठाः** यह रूप है। लोक में **अजनिष्ठाः** यह रूप है।

**वप्**-धातु से कर्म में लुङ लकार के स्थान पर वप् प्रत्यय होने से झि होने पर वप् झि इस स्थिति में झि के स्थान पर जुस करने पर और अनुबन्धलोप होने पर धातु से च्लि और च्लि के स्थान पर सिच होने पर और अनुबन्धलोप होने पर वप् स् उस्

टिप्पणी



इस स्थिति में वदव्रजहलन्तस्याचः इस सूत्र से धातु के अकार को दीर्घ आकार करने पर माङ्योग के होने पर यहाँ धातु से लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इससे धातु से प्राप्त अडागम होने पर न माङ्योगे इससे निषेध होने पर भी छन्द विषय में प्रयोगवश से प्रकृतसूत्र से धातु को अडागम होने पर प्रक्रिया के द्वारा मा **अवाप्सुः** यह रूप सिद्ध होता है।

**विशेष–** इस सूत्र में 'बहुलम्' इस पद ग्रहण से सूत्र के द्वारा विहित कार्य बहुल करके होते है।

## 21.8 छन्दस्युभयथा॥ ( 6.4.86 )

**सूत्रार्थ–** भू सुधि को यण् हो और इयङुवङ।

**सूत्रावतरण**- लोक में अजादिसुप के परे भूशब्द को और सुधीशब्द को यण् नहीं होता है, अपितु यथाक्रम से उवङादेश और इयङादेश होता है। यहाँ वेद में इयङुवङादेश के साथ यणादेश का भी समुच्चयार्थ के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से यणादेश और इयङुवङादेश का विधान है। इस सूत्र में छन्दसि यहाँ पर विषयसप्तमी, और उभयथा यह अव्यय पद है। यहाँ न भूसुधियोः इस सूत्र से भूसुधियोः इस षष्ठीद्विवचनान्त पद की अनुवृति। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि भूसुधियोः उभयथा इति। यहाँ उभयथा क्या होता है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर दिया जाता है- इणो यण् इससे यण् इस प्रथमान्त पद की, ओः सुपि इससे सुपि इस सप्तम्यन्त पद, अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ इससे अचि सप्तम्यन्त पद की, इयङुवङौ इस प्रथमाद्विवचनान्त पद की इस सूत्र में अनुवृति है। उससे यहाँ सूत्र का अर्थ होता है– छन्द विषय में भू सुधि को अजादिसुप के परे यण् और इयङुवङादेश होता है।

**उदाहरण** - विभ्वम्- विभुवम्, सुध्यः- सुधियः।

**सूत्रार्थसमन्वय** - विभू-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर द्वितीया एकवचन में अम करने पर विभू अम् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ऊकार के स्थान में यण करने पर स्थान आन्तर्य से वकार करने पर विभ्वम् यह रूप, विकल्प से ऊकार के स्थान में उवङादेश होने पर **विभुवम्** यह अन्य रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **विभुवम्** यह रूप है।

**सुधी**-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर प्रथमा बहुवचन में जस करने पर अनुबन्धलोप होने पर सुधी अस् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ईकार के स्थान में यण करने पर स्थान आन्तर्य से यकार करने पर विभक्तिकार्य करने पर **सुध्यः** यह रूप, विकल्प से ईकार के स्थान में इयङादेश होने पर **सुधियः** यह अन्य रूप है। लोक में तो **सुधियः** यह रूप है।

टिप्पणी

## 21.9 श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि॥ ( 6.4.102 )

**सूत्रार्थ**- श्रु, शृ, णु, पृ, कृ, वृ- इनसे उत्तर हि को धि आदेश होता है छन्द विषय में।

**सूत्रावतरण**- वेद में श्रुशृणुपृकृवृ से उत्तर हि के स्थान में 'धि' इसका विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से हि के स्थान में 'धि' इसका विधान करते है। इस सूत्र में श्रुशृणुपृकृवृभ्यः यह पञ्चमीबहुवचनान्त पद है, छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। हुझल्भ्यो हेर्धिः इस सूत्र से हेः इस षष्ठ्यन्त पद की, और धिः इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदयोजना इस प्रकार है- छन्दसि श्रुशृणुपृकृवृभ्यः हेः धि : इति। उससे सूत्र का अर्थ होता है– छन्द विषय में श्रुशृणुपृकृवृ से परे हि के स्थान में धि हो।

**उदाहरण**- श्रुधी।

**सूत्रार्थसमन्वय**- श्रु-धातु से कर्ता में लोट सिप करने पर श्रु सि इस स्थिति में सेर्ह्यपिच्च इस सूत्र से सि के स्थान में 'हि' आदेश होने पर श्रु हि इस स्थिति में धातु से शप्-प्रत्यय करने पर बहुलं छन्दसि इससे शप का लुक होने पर प्रकृतसूत्र से श्रु-धातु के परे हि के स्थान में धि-आदेश होने पर अन्येषामपि दृश्यते इस सूत्र से धि के परे इकार को दीर्घ ईकार करने पर **श्रुधी** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **शृणु** यह रूप है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण को स्वय ही जानना चाहिए।

## 21.10 वा छन्दसि॥ ( 3.4.88 )

**सूत्रार्थ**- छन्द में अपित् विकल्प से होता है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से हि को विकल्प से अपित् होता है। इस सूत्र में वा यह अव्ययपद है, छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है। सेर्ह्यपिच्च इस सूत्र से यहाँ हि इस लुप्तप्रथमान्त पद, अपित् इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदयोजना- छन्दसि हिः अपित् वा इति। उससे सूत्र का अर्थ होता है- छन्द विषय में हि (आदेश) उसको विकल्प से अपित् हो।

**उदाहरण** - प्रीणाहि, प्रीणीहि।

**सूत्रार्थसमन्वय** - प्रीञ् तर्पणे इस धातु से कर्ता में लोट सिप करने पर प्री सि इस स्थिति में धातु से श्नाप्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप होने पर प्री ना सि इस स्थिति में सिप के सि स्थान पर हि इत्यादेश होने पर प्री ना हि इस स्थिति में ई हल्यघोः इस सूत्र से हि के अपित्त्व होने से ना इसके आकार के स्थान में ईकार प्राप्त करने

टिप्पणी



पर प्रकृतसूत्र से हि को विकल्प से अपित्त अभाव में आकार के स्थान ईकार अभाव में नकार के स्थान में णकार करने पर **प्रीणाहि** यह रूप है। विकल्प से हि के अपित्त्वपक्ष में **प्रीणीहि** यह रूप। लोक में तो **प्रीणीहि** यह रूप है।

## 21.11 अङितश्च॥ ( 6.4.103 )

**सूत्रार्थ–** हि को धि हो।

**सूत्रावतरण**- अङित हि के स्थान पर धि विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से हि के स्थान पर धि का विधान करते है। इस सूत्र में हुझल्भ्यो हेर्धिः इस सूत्र से हेः इस षष्ठ्यन्त पद की और धिः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। छन्दसि इस विषयसप्तम्यन्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदो का अन्वय इस प्रकार है- छन्दसि अङितः हेः धिः च इति। सूत्रार्थ– वेद में अङित हि के स्थान में धि हो।

**उदाहरण** - प्रयन्धि।

**सूत्रार्थसमन्वय**- प्रपूर्वक यम्-धातु से कर्ता में लोट सिप करने पर सि के स्थान पर हि इत्यादेश होने पर प्र यम् हि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अपित्त्व होने से अङित हि के स्थान में धि इत्यादेश होने पर प्र यम् धि इस स्थिति में नश्चापदान्तस्य झलि इससे मकार को अनुस्वार करने पर अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः इससे अनुस्वार को परसवर्ण नकार करने पर **प्रयन्धि** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **प्रयच्छ** यह रूप होता है।

## 21.12 मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः॥ ( 6.4.141 )

**सूत्रार्थ–** आत्मन्शब्द के आदि आकार का लोप हो।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आत्मन्-शब्द के आदि आकार के लोप का विधान करते है। इस सूत्र में मन्त्रेषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है, आङि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है, आदेः और आत्मनः ये षष्ठी एकवचनान्त पद है। अल्लोपोऽनः इस सूत्र से लोपः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। आङ् इसकी टी संज्ञा है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- मन्त्रेषु आङि आत्मनः आदेः लोपः इति। सूत्रार्थ होता है–मन्त्र में आङ के परे आत्मन्शब्द के आदि आकार का लोप हो।

**उदाहरण**- त्मना देवेषु।

**सूत्रार्थसमन्वय**- आत्मन्-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और टा-विभक्ति और अनुबन्ध

टिप्पणी

लोप करने पर आत्मन् आ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मन्त्र में आङ्परे होने से आत्मन्-शब्द के आदि आकार का लोप होने पर और सवर्णदीर्घ होने पर **त्मना** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **आत्मना** यह रूप है।

## 21.13 बहुलं छन्दसि॥ (7.1.8)

**सूत्रार्थ–** छन्द में झकार को बहुल करके रुडागम हो।

**सूत्रावतरण**- छन्द में झादेश के अकार को बहुल करके रुडागम करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से झादेश अत को रुडागम होता है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि यह विषयसप्तम्यन्त पद है। झोऽन्तः इस सूत्र से झः इस षष्ठ्यन्त पद की, अतो भिस ऐस् इस सूत्र से अतः इस षष्ठ्यन्त पद की, शीङो रुट् इस सूत्र से रुट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। यहाँ पदयोजना- छन्दसि झः अतः रुट् बहुलम् इति। सूत्र का अर्थ होता है– छन्द में झादेश अत को रुडागम हो, और वह आगम बहुल करके होता है।

**उदाहरण** - दुह्हे।

**सूत्रार्थसमन्वय** - दुह्-धातु से कर्ता में लट आत्मनेपद झ प्रत्यय करने पर दुह् झ (झ् अ) इस स्थिति में आत्मनेपदेष्वनतः इससे झादेश झकार के स्थान में अत् इत्यादेश होने पर दुह् अत् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अकार को रुडागम और अनुबन्धलोप होने पर दुह् र् त् अ इस स्थिति में लोप होने पर आत्मनेपदेषु इससे तकार का लोप होने पर टिसंज्ञक अकार के स्थान में एकार करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर दुह्हे यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो दुहते यह रूप है।

### पाठगत प्रश्न-21.1

1. एवा यहाँ पर निपात को दीर्घ किस सूत्र से होता है?
2. अन्येषामपि दृश्यते इस सूत्र का एक उदाहरण बताइए?
3. छन्दस्युभयथा इस सूत्र में उभयथापद से किस का निर्देश है?
4. वा षपूर्वस्य निगमे इससे किसके परे विकल्प से दीर्घ होता है?
5. जनिता मन्त्रे इस सूत्र से किसके परे णिलोप का निपातन है?
6. छन्दस्यपि दृश्यते इस सूत्र से छन्द में क्या दिखाई देता है?

टिप्पणी



7. किसके परे धातुओं को आडागम और अडागम होता है?

8. छन्दस्युभयथा इस सूत्र से किसको यण् और इयङुवङ आदेश होता है?

9. वा छन्दसि इससे किसको विकल्प करते हैं?

10. अङितश्च इससे हि के स्थान में क्या आदेश होता है?

11. आत्मन्-शब्द के आदि आकार का लोप किस सूत्र से होता है?

12. दुह्हे यहाँ पर रुडागम किस सूत्र से होता है?

## 21.14 बहुलं छन्दसि॥ (7.1.10)

**सूत्रार्थ–** अकारान्त से उत्तर भिस को ऐस् हो।

**सूत्रावतरण**- छन्द में अकारान्त से परे भिस के स्थान में बाहुल्य से ऐस्-आदेश विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से छन्द में अकारान्त से परे भिस के स्थान में बहुल करके ऐस् होता है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि यह विषयसप्तम्यन्त पद है। अतो भिस ऐस् इस सूत्र से यहाँ अतः इस पञ्चम्यन्त पद की, भिसः इस षष्ठ्यन्त पद की, और ऐस् इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। छन्दसि अतः भिसः ऐस् बहुलम् इति पदयोजना। उससे यहा सूत्र का अर्थ होता है– छन्द में अकारान्त के परे भिस के स्थान में एकादेश हो, और वह आदेश बहुल करके होता है।

**उदाहरण** - देवेभिः।

**सूत्रार्थसमन्वय**- देव-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर उस तृतीया एकवचन में भिस करने पर देव भिस् इस स्थिति में अतो भिस ऐस् इससे भिस के स्थान में ऐसादेश प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होने पर बहुवचन में झल्येत् इस सूत्र से देव-इसके अकार के स्थान में एकार करने पर विभक्ति कार्य करने पर **देवेभिः** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो देवैः यह रूप है।

## 21.15 नेतराच्छन्दसि॥ (7.1.26)

**सूत्रार्थ–** सु और अम को अद्ड् आदेश न हो।

**सूत्रावतरण**- छन्द में क्लीबलिङ्ग में इतर-शब्द से परे सु, अम्-इनके स्थान में अद्ड्-आदेश का निषेध करने के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

टिप्पणी

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से इतर-शब्द से परे सु और अम के स्थान पर अद्ड्-आदेश का निषेध होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में न इतरात् छन्दसि ये पदच्छेद है। वहां न यह अव्यय है, इतरात् यह पञ्चम्यन्त पद और छन्दसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सु और स्वमो: यह षष्ठीद्विवचनान्त पद है, अद्ड्डतरादिभ्य: पञ्चभ्य: इस सूत्र से अद्ड् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस पद का यहा अधिकार है। इतरात् इस पद का यहाँ अङ्गपद का विशेषण है, इसलिए यहाँ विभक्तिविपरिणाम से अङ्गपद पञ्चम्यन्त होता है। उससे यहाँ पदयोजना होती है- छन्दसि इतरात् अङ्गात् स्वमो: अद्ड् न इति। सूत्र का अर्थ है- छन्द विषय में इतरशब्द से उत्तर सु और अम को अद्ड् आदेश न हो।

**उदाहरण**- इतरम्।

**सूत्रार्थसमन्वय–** क्लीबलिङ्ग में इतरशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु-प्रत्यय करने पर इतर सु इस स्थिति में अद्ड्डतरादिभ्य: पञ्चभ्य: इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान में अद्डादेश प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होने पर अतोऽम् इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान में अमादेश होने पर इतर अम् इस स्थिति में अमि पूर्व: इस सूत्र से पूर्वरूप एकादेश अकारे करने पर इतर म् इस स्थिति में वर्ण सम्मेलन करने पर इतरम् यह रूप सिद्ध होता है लोक में तो इतरत् यह रूप है।

## 21.16 क्त्वापि च्छन्दसि॥ ( 7.1.38 )

**सूत्रार्थ**- अनञ्पूर्व समास में क्त्वा आदेश होता है तथा ल्यब भी होता है।

**सूत्रव्याख्या–** इस विधिसूत्र में तीन पद है। क्त्वा अपि छन्दसि ये सूत्रगत पदच्छेद है। क्त्वा यह प्रथमान्त पद है। अपि यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। लोक में समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् इस सूत्र से नञ्समास भिन्नसमास में क्त्वा के स्थान में ल्यबादेश का विधान है। इस सूत्र से वेद में नञ्समास से भिन्नसमास में क्त्वा के स्थान में क्त्वा यह आदेश होता है। सूत्र में अपि ग्रहण से ल्यब भी होता है समास में भी और असमास में भी।

**उदाहरण**- परिधापयित्वा।

**सूत्रार्थसमन्वय**- परिपूर्वक ण्यन्त धा धातु से णिच क्त्वाप्रत्यय करने पर परि धा णिच् क्त्वा इस स्थिति में इस सूत्र से क्त्वा के स्थान में क्त्वादेश होने पर प्रकियाकार्य करने पर परिधापयित्वा यह रूप सिद्ध होता है। सूत्र में अपिग्रहण से ल्यब भी सिद्ध होता है। जैसे- उद्धृत्य तान् जुहोति यहाँ पर ल्यप् किया गया है। अप्राप्त ल्यप को प्राप्त कराने के लिए अपिशब्द का प्रयोग किया है।

टिप्पणी



## 21.17 सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः॥ (7.1.39)

**सूत्रार्थ–** सुपो के स्थान में सुलुक्पूर्वसवर्णआआत्शेयाडाड्याच्आल् ये आदेश हो छन्द में।

**सूत्रव्याख्या–** यहाँ दो पद विद्यमान है। सुपाम् यह षष्ठ्यन्त पद है। सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्याजालः यह प्रथमान्त पद है। क्त्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति है, यहाँ वैषयिक सप्तमी। उससे सूत्र का अर्थ होता है सुब्विभक्तियो के स्थान में सुलुक्पूर्वसवर्णआआत्शेयाडाड्याच्आल् ये आदेश हो छन्द विषय में।

**उदाहरण**- ऋजवः सन्तु पन्थाः। परमे व्योमन्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- ऋजवः सन्तु पन्थाः लोक में पथिन्शब्द का प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस्प्रत्यय करने पर पथिन् जस् इस स्थिति में इतोऽत्सर्वनामस्थाने इस सूत्र से इकार को अकार करने पर पथन् अस् इस स्थिति में पथन् अस् इस स्थिति में थो न्थः इस सूत्र से थकार को न्थादेश होने पर पन्थ् अन् अस् इस स्थिति में नान्त की उपधादीर्घ होने पर पन्थानः यह रूप हो परन्तु वेद में प्रयोग होने से प्रकृतसूत्र से जस के स्थान में सु आदेश और अनुबन्धलोप होने पर पथिन् स् इस स्थिति में पथिमथ्यृभुक्षामात् इस सूत्र से आकारान्तादेश होने पर पथि आ स् इस स्थिति में इतोऽत् सर्वनामस्थाने इस सूत्र से इकार को अकार करने पर पथ आ स् इस स्थिति में थो न्थः इस सूत्र से थकार के स्थान में पन्थादेश होने पर पन्थ् अ आ स् इस स्थिति में अकार आकार को सवर्णदीर्घ आकार करने पर पन्था स् इस स्थिति में सकार को रुत्व विसर्ग करने पर पन्थाः यह रूप सिद्ध होता है।

**परमे व्योमन्**- व्योमन्शब्द का सप्तमी एकवचनविवक्षा में ङिप्रत्यय करने पर व्योमन् ङि इस स्थिति में इसका वेद में प्रयोग होने से प्रकृतसूत्र से ङिप्रत्यय का लुक् होने पर **व्योमन्** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **व्योमनि, व्योम्नि** ये दो रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए।

### 21.17.1 (वा.) आङ्याजयारामुपसंख्यानम्म

**वार्तिकार्थ–** टा प्रत्यय के स्थान में आङ् अयाज् और अयार् आदेशा होते है ऐसा कहना चाहिए।

**वार्तिकव्याख्या**- आङ्याजयाराम् यह षष्ठ्यन्त पद है। उपसंख्यानम् यह अव्ययपद है। छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। सूत्र का अर्थ होता है– छन्द विषय में तृतीया एकवचन टा के स्थान में आङ् अयाच् अयार् ये आदेश होता है ऐसा कहना चाहिए।

टिप्पणी

**उदाहरण**- बाहवा सिसृतम्।

**सूत्रार्थसमन्वय–** बाहुशब्द से टाप्रत्यय करने पर बाहुना यह हो। किन्तु बाहु टा इस स्थिति में प्रकृतवार्तिक से टा इसके स्थान में आङ् आदेश होने ङकार के इत्संज्ञा और लोप होने पर बाहु आ इस स्थिति में आङ के ङित्त् होने से और उकारान्तबाहु शब्द की शेषो घ्यसखि इस सूत्र से घिसंज्ञा होने से हकार के उत्तर उकार की घेर्ङिति इस सूत्र से गुण ओकार करने पर बाहो आ इस स्थिति में ओकार के स्थान में एचोऽयवायावः इससे अवादेश होने पर **बाहवा** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **बाहुना** यह रूप है।

ऐसा ही अन्य जगह समझना चाहिए।

## 21.18 लोपस्त आत्मनेपदेषु॥ (7.1.41)

**सूत्रार्थ–** आत्मनेपद संज्ञक जो तकार उसका छन्द विषय में लोप हो जाता है।

**सूत्रव्याख्या–** इस सूत्र में तीन पद है। लोपः तः आत्मनेपदेषु यह सूत्र में आये पदच्छेद है। लोपः यह प्रथमान्त पद है। तः यह षष्ठ्यन्त पद है। आत्मनेपदेषु यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिकसप्तमी है। क्त्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति है। सूत्र का अर्थ होता है- आत्मनेपद पद में जो तकार है उसका लोप हो वेद में।

**उदाहर**- देवा अदुह्व।

**सूत्रार्थसमन्वय**- देवा अदुह्व यह वैदिक प्रयोग है। इसलिए ही अदुह्व यहाँ पर तङानावात्मनेपदम् इस सूत्र से आत्मनेपदसंज्ञक त प्रत्यय का लोप होता है।

अदुह्व इस उदाहरण में दुह्धातु से लङ में झप्रत्यय करने पर आत्मनेपदेष्वनतः इस सूत्र से झकार के स्थान में अत् आदेश होने पर दुह् अत् इस स्थिति में बहुलं छन्दसि इस सूत्र से रुडागम और अनुबन्धलोप होने पर टित्त्व होने से आदि अवयव में दुह् र् अत् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से तकार का लोप होने पर दुह् र् अ अ इस अवस्था में अतो गुणे इस सूत्र से अकार को पररूप एकादेश होने पर लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से अडागम होने पर अनुबन्धलोप होने पर अ दुह् र् अ इस स्थिति में सभी वर्णों के मिलान करने पर **अदुह्व** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **अदुहत** यह ही रूप है।

## 21.19 यजध्वैनमिति च॥ (7.1.43)

**सूत्रार्थ–** एनम इसके परे रहते ध्वम के अन्त लोप का निपातन किया जाता है।

**सूत्रव्याख्या–** यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। यजध्व एनम् इति च ये सूत्रगत

पदच्छेद है। यजध्व यह तिङन्त पद है। एनम् यह लुप्तसप्तम्यन्त पद है। इति यह अव्ययपद है। च यह अव्ययपद है।

**उदाहरण**- यजध्वैनं प्रियमेधाः।

**सूत्रार्थसमन्वय**- (यजध्वम् एनम्) यजध्वैनम् इस प्रयोग का यह छान्दस होने से यजध्वम् इससे परे एनम् यह शब्द है। इसलिए प्रकृतसूत्र से मकार का लोप निपातन से करने पर यजध्व एनम् इस स्थिति में वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकारैकार को वृद्धि ऐकार करने पर यजध्वैनमिति रूप सिद्ध होता है।

## 21.20 तस्य तात्।। (7.1.44)

**सूत्रार्थ**– मध्यम पुरुष बहुवचन के स्थान में तात् आदेश हो।

**सूत्रव्याख्या**– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। तस्य तात् ये सूत्रगतपदच्छेद है। तस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। तात् यह प्रथमान्त विधेयबोधक पद है। क्त्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। यजध्वैनमिति च इससे और, तप्-तनप्-तन-थनाश्च इससे पूर्वोत्तरसूत्र के साहचर्य से इस सूत्र में त इस मध्यमपुरुषबहुवचन का ग्रहण होता है, तङः का ग्रहण नहीं होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है- छन्द विषय में मध्यमपुरुष बहुवचन के स्थान में तात् यह आदेश हो।

**उदाहरण**- गात्रमस्या नूनं कृणुतात्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- हिंसाकरणार्थक-कृवि-धातु से लोट मध्यम पुरुष बहुवचन में थप्रत्यय करने पर उसके स्थान में तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः इस सूत्र से तकारादेश होने पर कृव् त इस स्थिति में अनेकाल् शित्सर्वस्य इस परिभाषा से परिष्कार करने पर प्रकृतसूत्र से उसके स्थान में तात् यह सर्वादेश करने पर कृव् तात् इस स्थिति में मिदचोऽन्त्यात्परः इस परिभाषा से परिष्कार करने पर उदितो नुम्धातोः इस सूत्र से नुमागम और अनुबन्धलोप करने पर कृ न् अ व् तात् इस स्थिति में धिन्विकृण्व्योर च इस सूत्र से उप्रत्यय करने पर वकार और अकार करने पर कृ न् अ उ तात् इस अवस्था में अतो लोपः इस सूत्र से अकार का लोप करने पर कृ न् उ तात् इस अवस्था में ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् इस वार्तिक से नकार को णत्व करने पर कृ ण् अ उ तात् इस स्थिति में **कृणुतात्** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **कृणुत** यह रूप है।

## 21.21 इदन्तो मसि।। (7.1.46)

**सूत्रार्थ**- मस् शब्द को इकारान्त होता है।

**सूत्रव्याख्या**– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। इदन्तः मसि ये सूत्रगतपदच्छेद है। इदन्तः यह प्रथमान्त पद है। मसि यह प्रथमान्त पद है यहाँ सकार में जो इकार

है वह उच्चारण के लिए। इत् अन्ते यस्य स इदन्तः। क्त्वापि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है यहाँ वैषयिक सप्तमी। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में मस् यह शब्द इदन्त होता है। अर्थात् मस को इक्-आगम होता है। कित्त्व होने से अन्त्य अवयव को होता है। उससे मस यह इदन्त है।

**उदाहरण**- नमो भरन्त एमसि।

**सूत्रार्थसमन्वय**- एमसि यहाँ पर आ इमसि ये विच्छेद है। इमसि यहाँ पर इण् गतौ इस धातु से लट उत्तम पुरुष बहुचवन की विवक्षा में लकार के स्थान में मसादेश और शप आदेश होने पर और शप का लुक होने पर आ इ मस् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मस के इदन्त होने से आ इमसि इस स्थिति में आद् गुणः इस सूत्र से आकार इकार को गुण एकार होने पर एमसि यह रूप सिद्ध होता है। नमो भरन्त एमसि इसका अर्थ हम नमस्कार करके आये यह अर्थ है। लोक में तो (आ इमः) इमः यह रूप होता है।

## 21.22 क्त्वो यक्॥ (7.1.47)

**सूत्रार्थ**– छन्द में क्त्वा को यक् आगम होता है।

**सूत्रव्याख्या**– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। क्त्वः यक् ये सूत्रगत पदच्छेद है। क्त्वः यह षष्ठ्यन्त पद है। यक् यह प्रथमान्त पद है। क्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। छन्द विषय में क्त्वा को यक् आगम होता है। यक के कित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से आगमिन अन्त्य अवयव होता है।

**उदाहरण**- दिवं सुपर्णो गत्वाय।

**सूत्रार्थसमन्वय**- गमनक्रियावाची भ्वादिगण की गम्लृ-गतौ इस धातु से क्त्वाप्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप होने पर गम् त्वा इस स्थिति में अनुदात्तोपदेश-वनति-तनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति इस सूत्र से अनुनासिक का लोप करने पर ग त्वा इस स्थिति में प्रकृत का छन्दोविषय होने से प्रकृतसूत्र से यगागम होने पर अनुबन्धलोप होने पर कित्त्व होने से अन्त्यावयव में ग त्वा य इस स्थिति में सभी वर्णो को मिलाने पर गत्वाय यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो गत्वा यह रूप है।

### पाठगत प्रश्न-21.2

13. क्त्वापि च्छन्दसि इस सूत्र से क्या आदेश विहित है?

14. क्त्वापि च्छन्दसि इस सूत्र में अपि शब्द बल से क्या होता है?

15. क्त्वापि च्छन्दसि इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

16. आङ्याजयारामुपसंख्यानम् यह सूत्र है अथवा वार्तिक?

17. आङ्याजयारामुपसंख्यानम् इस वार्तिक का एक उदाहरण लिखिए।

18. लोपस्त आत्मनेपदेषु इससे किसके लोप का विधान है?

19. यजध्वैनमिति च इस सूत्र से किसके अन्तलोप का विधान है?

20. श्रीग्रामण्योश्छन्दसि इस सूत्र से किसको नुडागम विहित है?

21. गोः पादान्ते इस सूत्र का एक उदाहरण लिखिए।

## पाठसार

इस पाठ में दीर्घविधिविषय की आदि में कुछ नियमों की आलोचन की है। निपातस्य च इस सूत्र से ऋचा विषय में निपातनो को दीर्घ विधान करते है। एवा इति उसका उदाहरण है। अन्येषामपि दृश्यते इस सूत्र से उन सबकी पूर्व आलोचना सूत्रों के द्वारा की है जहां दीर्घ प्राप्त नहीं होता है उन अवशिष्ट में दीर्घ का विधान करते है। नामि इससे नाम के परे विकल्प से दीर्घ का विधान करते है। जनिता मन्त्रे इस सूत्र से वेद में इडादि तृच के परे होने पर णी के इकार के लोप का विधान करते है। छन्दस्यपि दृश्यते इससे वेद में लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे हलादि धातुओं को भी आडागम का विधान करते है। बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि इससे बहुल अर्थ में लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु के परे हलादि और अजादि धातुओं को अडागमाडागम के निषेध का विधान करते है, और माङ्योगे में भी अडागमाडागम का विधान करते है। छन्दस्युभयथा इससे भू सुधि को यणादेश और इयङुवङ का विधान करते है। और श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि इत्यादि सूत्र के द्वारा हि को धि आदेशविषय में विशिष्ट नियमों को कहा है। मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः इस सूत्र से मन्त्र में आङ के परे आत्मन्शब्द के आदि आकार के लोप का विधान करते हैं। बहुलं छन्दसि इससे छन्द में झादेश को अत बाहुल्य से रुडागम का विधान करते हैं। बहुलं छन्दसि इस द्वितीय सूत्र से देवेभिः इत्यादि में अतो भिस ऐस् इससे प्राप्त ऐकादेश का निषेध करते है। लोक में क्लीबलिङ्ग में डतरादि पञ्च शब्दो से परे सु और अम के स्थान में अद्डादेश होता है, परन्तु वेद में नेतराच्छन्दसि इस सूत्र से उस अद्डादेश का निषेध होता है। क्त्वापि छन्दसि इस सूत्र से वेद में क्त्वा के स्थान में क्त्वादेश का विधान करते है। कैसे सुपां सुलुक् इत्यादि सूत्र से सु का लुक् होता है। और कैसे लोपस्त आत्मनेपदेषु इस सूत्र से तप्रत्यय के लोप का विधान किया गया है उन सब की यहाँ इस पाठ में आलोचना की है।

## पाठान्त प्रश्न

1. निपातस्य च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. छन्दस्युभयथा इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. ऋभुक्षाणम् यह रूप सिद्ध कीजिए।
4. आनट् इस रूप को सिद्ध कीजिए।
5. अवाप्सुः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
6. सुधियः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
7. प्रीणाहि इस रूप को सिद्ध कीजिए।
8. दुह्रे इस रूप को सिद्ध कीजिए।
9. देवेभिः यह रूप को सिद्ध कीजिए।
10. नेतराच्छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. परिधापयित्वा इस रूप को सिद्ध कीजिए।
12. बाहवा इस रूप को सिद्ध कीजिए।
13. अदुह्र इस रूप को सिद्ध कीजिए।
14. कृणुतात् इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।
15. नमो भरन्त एमसि यहाँ पर एमसि इस रूप की सिद्ध कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### 21.1

1. निपातस्य च।
2. पूरुष।
3. यण् और इयङुवङ ये आदेश होते है।
4. असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने के परे।
5. इडादि तृच के परे रहते।

6. हलादि धातुओं को भी आडागम होता है।

7. लुङ्-लङ्-लृङ् के परे।

8. भुसुधियोः।

9. अपित को विकल्प से होता है।

10. धि आदेश होता है।

11. मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः इस सूत्र से।

12. बहुलं छन्दसि इस सूत्र से।

21.2

13. क्त्वादेश।

14. ल्यबादेश भी होता है।

15. परिधापयित्वा।

16. वार्तिक।

17. बाहवा सिसृतम्।

18. तप्रत्यय का।

19. ध्वम।

20. आम।

21. विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनाम्।

**इक्कीसवां पाठ समाप्त**